रात्रिक्लास 24/4/68 ओमशान्ति "शिवबाबा याद है?"

रूहानी म्युज़ियम दिल से जंचता नहीं है। अक्षर ऐसी नि(ल)खनी चाहिए फिर से 5000 वर्ष बाद रूहानी नॉलेज रूहानी बच्चों को मिल रहा है। फिर गुम हो जाती है। तो समझे कि बाप ही पढ़ा रहे हैं। कृष्ण तो दैवी गुणों वाला मनुष्य हो गया। निराकार भगवान कैसे पढ़ाते हैं यह पूछने का कारण मिलेगा। उनको कहा ही जाता है निराकार। जिसका अर्थ नहीं है उसको भक्ति मार्ग में याद करते हैं। परमपिता परमात्मा पतित–पावन को याद करते हैं। कृष्ण को तो पतित–पावन नहीं कहते। अगर कृष्ण का कहें तो राम का नाम न लेवें। अंधश्रद्धा से सीख जाते हैं। ज्ञान तो है नहीं। भक्ति है। भक्ति के लिए ज्ञान है, ऐसे नहीं कि राजाई के लिए ज्ञान है। भल पाठशाला लिखते हैं। गीता को पाठशाला कहेंगे। मंदिर में जावेंगे तो पाठशाला नहीं कहेंगे। गीता पाठशाला कहते हैं। वेद–उपनिषद आदि को पाठशाला नहीं कहेंगे। पाठशाला में एमऑबजेक्ट होती है। फलाना दर्जा मिलेगा। यह भी ऐसी है पाठशाला। बाप बैठ पढ़ाते हैं। किसका पाठ? राजयोग का पाठ पढ़ाते हैं। बाप जो ज्ञान देते हैं वह प्रायःलोप हो जावेगा। इनको (ल.ना.) को भी यह ज्ञान नहीं है। तुमको अभी ज्ञान मिलता है यह बनने के लिए। पद पा लिया फिर ज्ञान की दरकार नहीं। बाकी भाषा के लिए पढ़ते हैं। इस दुनियां की हिस्ट्री–जॉग्राफी कोई नहीं जानते हैं। तो बाप सिद्ध कर बतलाते हैं भक्ति मार्ग में ज्ञान है नहीं। जानने लायक कोई चीज़ नहीं। जानने से मनुष्य ऊँच पद पाते हैं। बाप आकर स्वर्ग़ का वर्सा देते हैं। वहां पवित्र रहते हैं। तो पवित्र ज़रूर बनना पड़े। तुम्हारी लड़ाई है 5 विकारों रूपी रावण से। बड़ा झगड़ा काम पर चलता है। शुरू में भी कहते थे ज्ञान–अमृत पीने जाते हैं। बाप ही कहते थे अमृत छोड़ विख काहे को खाते हो। विख खाने वाले को विषस(विशयस) विकारी कहा जाता है। अक्षर तो है ना। अर्थ भी है। वायसलेस दुनियां। यह है निर्विकारी दुनियां के मालिक। विकारी किसको, निर्विकारी किसको कहा जाता है मनुष्य जानते ही नहीं। तुम ब्राह्मण ही समझते हो। गांव–2 में प्रोजेक्टर ले जाकर समझाने से चित्र ले जाना अच्छा है। प्रोजेक्टर पर समझाने से ज्ञान का इतना प्रभाव नहीं पड़ता है। कहां लाइट हो, न भी हो। प्रोजेक्टर तो काम दे न सके। जिनको भी फ्रीडम है तो घर–2 6–8 चित्र मुख्य होनी चाहिए। सीढ़ी का , त्रिमूर्ति का, गीता का भगवान कौन? 6 चित्र काफी है। 6 चित्र दाम तो नहीं खाते हैं। जो अच्छे सर्विसएबुल बच्चे हैं, तो हर एक के घर–2 में म्युज़ियम होना चाहिए। प्रोजेक्टर से इतना अच्छा नहीं देखने में आता। पढ़ भी न सके। चित्र तो पढ़ सकेंगे। अच्छी रीत समझ में आवेगा; इसलिए चित्र सबसे अच्छे हैं। ग़रीब भी रख सकते हैं। हर एक जो भी चाहते हैं किसको समझावें। मेहमान आकर घर में रहते हैं, मित्र–सम्बधी आदि आते हैं तो बहुत सर्विस कर सकते हैं। बांधेली हैं ज्ञान तो है ना। जितना हो सके घर में ही ज्ञान गंगा। तुम हो ज्ञान गंगाएं। जो आये उनको तुम समझावेंगे। तो सर्विस की वृद्धि होगी। इसमें लज्जा की बात नहीं। जंगली जनावर हैं। कुछ भी समझ नहीं है। बाप को ही नहीं जानते उनको महान मूर्ख कहा जाता है। बाप द्वारा ही जाना जाता है। बच्चे दिन–प्रतिदिन वृद्धि को पाते हैं। ब्राह्मणियों को पूछना चाहिए तुम घर में चित्र रख सकते हो? मित्र–सम्बंधी आते बहुत हैं। तो घर में चित्रमाला बनाना चाहिए। मंदिर तो छोटे होते हैं। कोठरी बनाते हैं। यह चित्र जास्ती जगह नहीं लेती है। समझाना है बाप यह वर्सा देते हैं। बाप भारत में ही आते हैं। भारत जब स्वर्ग़ था तो और कोई धर्म था नहीं। बाप आते हैं एक धर्म की स्थापना करने जबकि अनेक धर्म हैं। वह एक धर्म है नहीं। बच्चों को .... चाहिए किस प्रकार रहम करना चाहिए। अंधों की लाठी ... बाप का परिचय देवें। पैगम्बर मैसेंजर बनें। बहुतों का तुम कल्याण कर सकते हो। अभी थोड़े सेन्टर्स हैं। आगे चलकर घर–2 में भी चित्र होंगे। वह हैं चित्र भक्तिमार्ग के। यह हैं ज्ञान मार्ग के। तुम भेंट कर समझा सकते हो। वह झूठे चित्र कोई काम के नहीं। भक्ति मार्ग के चित्र भी रख सकते हो ज्ञान मार्ग के भी रख सकते हो भेंट सिद्ध करने लिए। सीढ़ी कितनी सहज है। 84 जन्मों की कहानी समझानी है। जिसने पूरे 84 जन्म लिया

है। वही जास्ती सुनने के ख़्वाइश रखेंगे। 80–81 जन्म लेने वाले पूरा इतनी ख़्वाइश न रखेंगे। ऊँच ते ऊँच बाप जो पढ़ाते हैं ऊँच ते ऊँच बनाने लिए। हम भी वही पढ़ते हैं। और सभी बातें भूल यह बात समझानी है। यह ईश्वरीय पाठशाला ईश्वरीय यूनिवर्सिटी हुई। यूनिवर्सिटी माना ही यूनिवर्सिटी। यह कैसे फिरते हैं इसकी नॉलेज तुमको मिलती है। तो यह है रूहानी यूनिवर्सिटी। परमपिता परमात्मा समझाते हैं आत्माओं को।

यहां आये हो टीचर बन जाने लिए। तुम हर एक ब्राह्मण को टीचर बनना चाहिए। टीचर अच्छा नहीं पढ़ाते हैं तो कहते हैं टीचर हज्जाम है। होशियार टीचर बनना चाहिए। यहां बैठे हो सेकण्ड में चक्र याद आता है। झाड़ याद आता है। पहले–2 है सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग। यह दिल में है। झाड़ सामने खड़ा है। बीज और झाड़। कैसे वृद्धि को पाता है यह मालूम पड़ जाता है। बच्चों के दिल में सारा चक्र याद है। तुम ही चक्रधारी बन जाते हो। हद की नॉलेज और बेहद की नॉलेज दोनों चाहिए। गृहस्थ व्यवहार में कमल फूल समान पवित्र बन यह नॉलेज भी देते रहो। वह भी पढ़ते रहो। वह भी समय आवेगा और सभी क्लास बन्द हो जावेंगे। सिर्फ यह एक जाकर रहेगा। टाइम ही न होगा तो पढ़कर क्या करेंगे? विनाश सामने खड़ा होगा तो अटेन्शन इस तरफ आ जावेगा। बच्चों को समझाया है हठयोग जो करते हैं ऐसे नहीं कि उनको बाप और सृष्टि चक्र बुद्धि में है। नहीं। बच्चे जानते हैं हम पहले पवित्र प्रवृत्ति मार्ग में थे फिर 84 जन्म लेते–2 अप(वित्र) बने हैं, फिर 21 जन्म लिय सुख, पवित्र दुनिया में जावेंगे। संगमयुग पर पवित्र बनना है। पुरुषोत्तम बनना है। सहन तो करना ही पड़ेगा। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट। नमस्ते।

<u>रही हुई प्वाइन्ट्सः–(28/4/68)</u> इस समय सारी दुनिया पतित है। बाबा समझाते हैं इनका भी यह हाल। यह फर्स्ट क्लास पावन था। फिर 8(4) लेते–2 पतित बनना पड़ता है। अभी एक मिला है तो सर्व की सद्गति हो जाती है। भक्त ही आते हैं। सभी भक्त ही हैं ना। भगवान भक्तों को आकर उठाते हैं। भगवान पढ़ा क(र) ज़रूर भगवान–भगवती ही बनावेंगे; परन्तु कहते हैं कोई भी मनुष्य को भगवान–भगवती नहीं कहा जाता। यह दैवी गुणों वाले मनुष्य हैं। इनको देवता कहा जाता है, जो 84 जन्म ले फिर अंत में आकर आसुरी गुणों वाले बन जाते हैं। फिर अभी मैं तुमको दैवी गुणों वाला बनाता हूँ। यह यूनिवर्सिटी वा कॉलेज है। दर्शन की कोई बात नहीं। पढ़ाने वाले से पढ़ना है। टीचर से पढ़ना होता है ना। दर्शन आदि यहां है नहीं। दर्शन आदि करना होता है सन्यासियों को। मनुष्य समझते हैं देवताओं के दर्शन होने से हम देवता बन जावेंगे। अच्छा, फिर हनुमान का दर्शन करने से हनुमान बन जावेंगे। भक्ति मार्ग में कितने ढेर के ढेर चित्र हैं। कृष्ण को भी काला बना दिया है। इसमें दिखाया है काली दुनियां नर्क को लात मार रहे हैं। तुमने लात मारी है ना। अभी यह कहते हैं मैं आ रहा हूँ। श्री कृष्ण में सभी का प्यार रहता है। ज्ञान के बाद भक्ति, भक्ति के बाद है ज्ञान। ज्ञान वाले फिर भक्ति में ज़रूर जाने हैं। पहले भक्ति भी तुम शुरू करते हो। फिर ज्ञान में भी पहले तुम आते हो। हिसाब है ना। ओम।

तुम ब्राह्मणों को कहा जाता है स्वदर्शनचक्रधारी। नया कोई सुने तो स्वदर्शनचक्रधारी भव तो कहेंगे यह कहां की भाषा है। स्वदर्शनचक्रधारी तो विष्णु था। ज़रूर मूंझेंगे; इसलिए नये को पहले अलफ़ से समझाना पड़ता है। पहले तो समझाना है मनुष्य मात्र के दो बाप हैं। यह पारलौकिक बेहद के बाप का वर्सा है ना। शिवबाबा जब आये थे तो यह स्वर्ग़ का वर्सा दिया था। तुम जानते हो कल की बात है। भारत विश्व का मालिक था। इसमें मुख्य है पवित्रता की बात। कहते हैं यह भाई–बहन बनाते हैं। अभी तो बाबा उनसे भी ऊपर ले जाते हैं। भाई–2 समझो। यही डिफिकल्ट सबजेक्ट है। बाप कहते हैं मैं आत्माओं को पढ़ाता हूँ। आत्माओं को ही देखता हूँ। सकाश देता है अपन को भी अशरीर, दूसरों को भी अशरीर देखना है। ऐसे देखते–2 शरीर को भी भूल जावेंगे। यह अशरीर होने की प्रैक्टिस पर(ड़) जावेगी। तुम हल्के होते जावेंगे। बाप तो युक्तियां बताते हैं। ओम।